

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीकृष्णकरि रिरचितं  
॥ श्रीरघुरीरसुप्रभातम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीरघुरीरसुप्रभातम् ॥

परिणतिपरिशंसी मन्दमन्दं निशाया  
मृदुमधुरनिनादो जृम्भतेहयं मृदङ्गां।  
करतलपरिमृष्टाद् बन्दिनामागतानां  
रघुकुलजलधीन्दो नाथ ते सुप्रभातम् ॥ 1 ॥

मूत्ररिक्कलगीतैर्मोहयन्निन्द्रियौघं  
श्रुतिपुटरिररात्र्यां मन्दमन्तः प्ररिष्या।  
अयमपहरति द्राङ्गानसं रेणुनादो  
रघुकुलजलधीन्दो नाथ ते सुप्रभातम् ॥ 2 ॥

उदयति निशि यस्मिन् सदागणो धिक्कृतोहडुं  
स तु पतनमुपैष्यत्युन्नतिं धिग् धिगिन्दोः।  
प्रभरति हि रिभूत्ये सदागणस्योन्नतिस्ते  
रघुकुलजलधीन्दो नाथ ते सुप्रभातम् ॥ 3 ॥

अयमुदयति गूढः किष्किदुच्छैः सरिद्धिः  
श्रयति सपदि भास्वानंशुजालैः परीतः।  
हरिहरिदसिताम्ब्याः कक्कताभां कराञ्जे  
रघुकुलजलधीन्दो नाथ ते सुप्रभातम् ॥ 4 ॥

दशशतकरजालं द्राक् प्रसार्यंशुमालि -  
न्यमरदिगसिताम्ब्याम्लेषणायोनूखेहस्मिन्।  
कलमिह रचयन्ते गीतमेता रिहस्ये  
रघुकुलजलधीन्दो नाथ ते सुप्रभातम् ॥ 5 ॥

রিকচজলজগন্ধানাহরন্ মন্দরাত -  
শ্চিরমযমরগাহ্য শ্রোতসি হ্রাদিনীনাম্।  
শমযতি তর দেৰ্যাঃ স্বেদবিন্দুন্ মুখাজ্জে  
রঘুকুলজলধীন্দো নাথ তে সুপ্রভাতম্ ॥ 6 ॥

জনকনৃপতিকন্যা পূৰ্ণমের প্রবুদ্ধা  
কথমপি রিরচয়্যাশ্লেষভেদং তরৈষা।  
রচযতি ননু দূরে ক্লেশমারীজনাৎ তে  
রঘুকুলজলধীন্দো নাথ তে সুপ্রভাতম্ ॥ 7 ॥

তর চরণসরোজদ্বন্দ্বসংরাহনেন  
হ্যমপি গমযিৎরা শরীরীং নির্নিমেষম্।  
অরুণনযনকোণঃ প্রাঞ্জলির্রাযুসুনু  
রঘুকুলজলধীন্দো নাথ তে সুপ্রভাতম্ ॥ 8 ॥

কমপি কুলিশপাণেরাযুধেনাপ্যভেদ্যং  
রচযসি যদি সেতুং দেব সংসারসিক্কোঃ।  
তরতি সুখমিদানীং সর্ব এরাত্র লোকে  
রঘুকুলজলধীন্দো নাথ তে সুপ্রভাতম্ ॥ 9 ॥

॥ ইতি শ্রীঘুরীরসুপ্রভাতং সমাপ্তম্ ॥